ISSN No. : 2394-0344 REMARKING : VOL-1 * ISSUE-10*March-2015

मारवाड़ क्षेत्र में पर्यटन से आर्थिक विकास की संभावनायें

शंकर लाल
व्याख्याता,
भूगोल विभाग,
बाबा भगवानदास राजकीय
स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
चिमनपुरा (शाहपुरा) जयपुर

ताराचन्द
शोधार्थी,
भूगोल विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर

सारांश

मारवाड़ क्षेत्र में प्राचीन ऐतिहासिक धरोहर एवं गौरवभव संस्कृति को बचाये रखने में पर्यटन का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। थार मरूस्थल में जीवन के लिए विपरीत परिस्थितियों के बावजूद क्षेत्रवासियों की जीवटता ने यहां पर्यटन स्थलों के संरक्षण को बढ़ावा दिया है। मारवाड़ क्षेत्र में आय के स्त्रोत सीमित है।

क्षेत्रवासियों के लिए पर्यटन एक संसाधन के रूप में उभरा है। यहां पर्यटलों के आने से होने वाली आय एवं रोजगार वृद्धि क्षेत्रवासियों के लिए आय एवं रोजगार का प्रमुख स्त्रोत बन कर उभरा है। मारवाड़ में हैरिटेज व पांच सितारा होटलों एवं विश्रामगृहों का विकास भी पर्यटन से ही संभव हो पाया। पर्यटन से ही यहां के परंपरागत हस्तकला व हथकरघा उद्योग के विकास से क्षेत्रवासियों को रोजगार के अवसर प्राप्त हो सके हैं। पर्यटन के विकास से क्षेत्र में परिवहन तंत्र का विकास मरू त्रिकोण के रूप में संभव हो पाया है।

मुख्य शब्द :उस्तकला, बजादा, ईको–टयूरिज्म, टेराकोटा, हथकरध सस्टेनेबल डवलमेंट टयूरिजमवेट, कुंरजा, अजरख प्रिंट, मिररवर्क मलीर प्रिंट।

प्रस्तावना

पर्यटन विश्व में सबसे बड़े उद्योग के रूप में उभरा है। अन्य आर्थिक सेक्टरों की तुलना में पर्यटन में निवेश से सर्वाधिक प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रोजगार सृजित होता है। साथ ही इससे बहुमूल्य विदेशी मुद्रा का अर्जन भी होता है। पर्यटन ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत तथा प्राकृतिक सौंदर्य से समृद्ध प्रदेशों के लिए एक वरदान साबित होता है। यह ऐसे क्षेत्रों के सामाजिक–आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

राजस्थान को पर्यटन के क्षेत्र में न केवल देश में अपितु विश्व पर्यटन मानचित्र पर प्रमुखता से जाना जाता है। राजस्थान को सदियों से उसके किले व महलों की गौरवगाथाओं, कला एवं संस्कृति मेले व त्यौहारों, धार्मिक स्थलों, प्राकृतिक सौन्दर्य, पशु–पक्षी अभ्यारण्य एवं ऐतिहासिक स्थलों के कारण देश–विदेश में सराहा जाता है।

पश्चिमी राजस्थान भारत के थार मरूस्थल का मुख्य भाग ही राजस्थान के पश्चिम में जोधपुर, जैसलमेर व बाड़मेर जिले मुख्यतया मारवाड़ प्रदेश कहलाता है।

राजस्थान का सबसे बड़ा जिला जैसलमेर अपने क्षेत्रफल एवं कम जनसंख्या के साथ–साथ ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों के लिए भी प्रसिद्ध है। जैसलमेर में विश्व प्रसिद्ध सोनार का किला (जो सूर्य रोशनी में स्वर्णिम आभा बिखेरता है) एवं प्रसिद्ध हवेलियाँ हैं जैसे– पटवों की हवेली, सालिम सिंह की हवेली, नथमल की हवेली, लोद्रवा, बादल विलास आदि प्रमुख है।

इनके अलावा धार्मिक पर्यटक स्थलों में रामदेवरा (राष्ट्रीय एकता एवं साम्प्रदायिक सद्भाव का मुख्य केन्द्र), तनोट माता का मंदिर (थार की वैष्णों देवी, सैनिकों की देवी), प्रमुख हैं। जहां देशी–विदेशी पर्यटक वर्ष पर्यन्त आते हैं।

प्राकृतिक पर्यटन स्थल में सम के धोरे, राष्ट्रीय मरू उद्यान, आकलवुड फॉसिल पार्क, गडसीसर झील आदि हैं जो सहज ही पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती है।

सूर्य नगरी व मरूस्थल का प्रवेश द्वार कहलाने वाला जोधपुर भी पर्यटक आकर्षण केन्द्रों में राजस्थान में प्रमुख स्थान रखता हैं। यहां का मेहरानगढ़ का किला, जसवंत थड़ा, उम्मेद भवन, एक थम्बा महल प्रमुख ऐतिहासिक पर्यटन स्थल है।

धार्मिक पर्यटक स्थल में देश भर में प्रसिद्ध सच्चियाय माता का मन्दिर (ओसियां) है। जहां देशी–विदेशी पर्यटक वर्ष पर्यन्त आते है। मंडौर उद्यान एवं

खींचन गांव अप्रवासी कुरजां पक्षियों के लिये प्रसिद्ध है। थार मरूस्थल एवं मारवाड़ प्रदेश का अन्य जिला बाड़मेर में भी पर्यटक आकर्षक स्थल है। ऐतिहासिक स्थलों में सिवाणा दुर्ग, गड़रा का शहीद स्मारक हैं तो धार्मिक स्थलों में मल्लीनाथ मंदिर, श्री नाकोड़ा तीर्थ स्थल, किराडू के मंदिर आदि प्रमुख हैं।

राजस्थान के पर्यटन सर्किट मरू त्रिकोण में एक अन्य जिला बीकानेर जो अपने ऐतिहासिक, प्राकृतिक व धार्मिक पर्यटन स्थलों की उपलब्धता के कारण पर्यटक आकर्षण का केन्द्र है। यहां के प्रमुख पर्यटन स्थलों में – जूनागढ़ फोर्ट, लालगढ़ पैलेस, करणी माता का मंदिर, श्री कोलायत जी, रामपुरिया हवेली, गजनेर वन्य जीव अभ्यारण आदि प्रमुख है।

पर्यटन सर्किट – मरू त्रिकोण

राजस्थान के प्रमुख पर्यटन सर्किटों में एक मरू त्रिकोण है। जो जैसलमेर–जोधपुर–बीकानेर–बाड़मेर को मिलाता है। बीकानेर–जैसलमेर–बाड़मेर को राष्ट्रीय राजमार्ग 115 जोड़ता है। वहां यह त्रिकोण रेलमार्ग से भी जुड़ा हुआ है। जोधपुर में राष्ट्रीय स्तर का हवाई अड्डा है। इस पर्यटन सर्किट का विकास करने के लिए पर्यटन विभाग द्वारा अनेक ट्यूर पैकेज तैयार किये जाते हैं। साथ मैलों का आयोजन भी सरकार करती है। जैसे– मरू महोत्सव, ऊँट महोत्सव, थार महोत्सव आदि।

मेगा डेजर्ट सर्किट (जैसलमेर–जोधपुर –बीकानेर –सांभर–पाली–माउंटआबू) का विकास करने के लिए राज्य व केन्द्र सरकार ने 50 करोड़ रूपये का प्रोजेक्ट शुरू कर रखा है। जिससे अधिक संख्या में पर्यटक इस सर्किट से जुड़ सके। पर्यटन क्षेत्र को विकसित करने के लिए राज्य सरकार ने अपने बजट में 2014–15 में 6695. 31 लाख रूपये का प्रावधान किया है। सराकर के इन प्रयासों का ही नतीजा है कि इस सर्किट पर वर्ष दर वर्ष पर्यटकों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। जो इस सारणी से समझी जा सकती है।

राज्य के इन तीन जिलों के प्रमुख पर्यटक स्थलों पर आने वाले पर्यटकों का विवरण

क्र. सं.	पर्यटक स्थल	2011		2012		2013		2014	
		देशी	विदेशी	देशी	विदेशी	देशी	विदेशी	देशी	विदेशी
1.	जोधपुर	404640	103034	383357	121034	435919	119927	520198	139640
2.	जैसलमेर	281159	122969	126490	73299	122883	73607	250716	91759
3.	बीकानेर	277546	74820	324988	76497	325653	74539	347294	67098

प्रगति प्रतिवेदन – 2014–2015, पर्यटन विभाग राजस्थान

पर्यटक एवं होटल व्यवसाय

पर्यटन स्थल पर भ्रमण पर आने वाले पर्यटकों को कुछ मूलभूत सुविधाओं एवं सेवाओं की आवश्यकता पड़ती है। जैसे – परिवहन के साधन, रूकने के लिए आवासीय व्यवस्था, खाने के लिए रेस्तरां, ट्यूरिस्ट गाइड आदि। इन सुविधाओं एवं सेवाओं की पूर्ति स्थानीय निवासियों द्वारा ही कर दी जाती है। जिससे यहां रोजगार के अवसरों का सृजन होता है। यह क्षेत्र बड़ी संख्या में कुशल व अकुशल श्रमिकों को प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से रोजगार उपलब्ध करवाता है, पर्यटकों के आने से ही यहां कई पांच सितारा होटल, हेरिटेज होटल आदि का विकास संभव हो पाया है। हेरिटेज होटल में ताज उम्मेद पैलेस होटल का नाम सर्वोपरि है जहां विदेशी पर्यटक सर्वोधिक ठहरते हैं। पांच सितारा होटल में विवांता (ताज हरी महल), वेलकम होटल जोधपुर आदि है। बीकानेर में होटल व्यवसाय बहुतायत में पनपा है। यहां के प्रमुख हेरिटेज होटलों में – लक्ष्मी निवास पैलेस, होटल गज केसरी, वेस्टा बीकानेर पैलेस, लालगढ़ पैलेस आदि प्रमुख है। जैसलमेर में सूर्यगढ़ होटल हेरिटेज होटल है। जो पांच सितारा होटल है। अन्य होटल – 3 पालस जैसल विलास, बायर्स फोर्ट, चोखी ढाणी द पैलेस होटल, फोर्ट रजवाड़ा, डेजर्ट ट्यूलिप, रंग महल आदि प्रमुख है। जैसलमेर में सूर्यगढ़ होटल हेरिटेज होटल है। जो पांच सितारा होटल है, अन्य होटल–3 पालमस जैसल विलास, बायर्स फोर्ट, चोखी ढाणी द पैलेस होटल, फोर्ट रजवाड़ा, डेजर्ट ट्यूलिप, रंग महल आदि प्रमुख है।

इस तरह जोधपुर में कुल 162 होटल, बीकानेर में 74 मुख्य होटल एवं 139 होटल जैसलमेर में है। यहां पर स्थानीय निवासियों द्वारा ही सेवायें दी जाती है। जिससे रोजगार के अवसर उपलब्ध होते हैं। नीचे दी गयी सारणी से पता लग सकता है कि किस प्रकार यहां पर्यटकों के आने से रात्रि विश्राम से विदेशी व देशी मुद्रा प्राप्त होती है

वर्ष 2014 में मरू त्रिकोण में आये विदेशी पर्यटकों का देशवार विवरण

क्र. सं.	नाम	1 यू.के.		2 फ्रांस		3 इटली		4 कनाडा		5 यू.एस.ए.		6 जर्मनी		7. आस्ट्रेलिया		8 स्विटजरलेण्ड		9. जापान	
		पर्यटक	रात्रि विश्राम	पर्यटक	रात्रि विश्राम	पर्यटक	रात्रि विश्राम	पर्यटक	रात्रि विश्राम	पर्यटक	रात्रि विश्राम	पर्यटक	रात्रि विश्राम	पर्यटक	रात्रि विश्राम	पर्यटक	रात्रि विश्राम	पर्यटक	रात्रि विश्राम
1.	जोधपुर	13764	15992	31916	36321	7946	9069	4400	5158	9030	10643	9600	11155	6629	7377	3237	3550	2004	2395
2.	जैसलमेर	6423	11979	21580	37662	5468	9971	2628	5032	3929	7333	8000	15502	2720	5343	3207	5957	1781	3064
3.	बीकानेर	1574	1652	21327	22071	3140	3302	1038	1082	686	728	6682	6989	1859	1939	3833	3992	57	62

प्रगति प्रतिवेदन 2014–2015 पर्यटन विभाग राजस्थान

पर्यटन व हस्तशिल्प एवं हथकरघा उद्योग

पर्यटक केन्द्रों के समीपी क्षेत्रों में बनी स्थानीय वस्तुओं को पर्यटक खरीदते हैं। इससे वहां के हस्तशिल्प एवं हथकरघा उद्योग को बढ़ावा मिलता है। एवं परम्परागत ज्ञान का संरक्षण भी हो जाता है। यहां इस हस्तशिल्प व हथकरघा उद्योग से विदेशी मुद्रा व देशी मुद्रा की पूर्ति होती है। जोधपुर का हैण्डीक्राफ्ट उद्योग पूरे देश भर में प्रसिद्ध है। यहां पर लकड़ी पर की गयी नक्काशी एवं उससे बने उत्पादों को विदेशों में निर्यात भी किया जाता है। ये उत्पाद पर्यटकों को अपनी ओर सहज ही आकर्षित करते हैं। जिससे यहां के मेहनतकश मजदूर एवं व्यापारियों को आमदनी होती है। इसी तरह यहां की जोधपुरी पोशाक की अपनी विशेष छाप पूरे राजस्थान में है।

यहां के बादला और जस्ते की मूर्तियाँ भी देशी–विदेशी पर्यटक अच्छी मात्रा में खरीदते हैं। इसी तरह जैसलमेर का मिररवर्क भी प्रसिद्ध है। बीकानेर की उस्तकला अपने भारतवर्ष में विख्यात मानी गयी है। जो ऊँट की चमड़ी पर बालों की कटिंग करके की जाती है। साथ ही यहां की सुनहरी टेराकोटा भी प्रसिद्ध है। बाड़मेर की मलीर प्रिंट एवं अजरख प्रिंट राजस्थान में विख्यात है। यहां का लकड़ी पर नक्काशी दार फर्नीचर विदेशों में निर्यात किया जाता है। ये सभी उद्योग हस्तशिल्प एवं हथकरघा से संबंधित है। एवं इनसे तैयार उत्पादों को यहां पर भ्रमण को आने वाले पर्यटक सहज ही अच्छी कीमत अदा कर खरीद लेते हैं। जिससे इस क्षेत्र में पर्यटन से यहां का आर्थिक विकास संभव होता है।

पर्यटकों के यहां पर आने से सबसे ज्यादा रोजगार के अवसरों की उपलब्धता भी यही के क्षेत्रवासियों को होती है। पर्यटन द्वारा सृजित रोजगार के अवसरों के फलस्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों से नगरों की ओर पलायन रूकता है। इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था भी सुदृढ़ होती है।

सुझाव

महात्मा गांधी ने कहा था कि पृथ्वी हर व्यक्ति की जरूरतों को पूरा करती है। लेकिन हर व्यक्ति की लालसा को नहीं; पर्यटन निसंदेह किसी भी राष्ट्र के आर्थिक विकास हेतु एक वरदान है। अनेक यूरोपीय देशों ने अपनी अर्थव्यवस्था में सुधार द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् पर्यटन के कारण ही किया है। इसने लाखों लोगों को रोजगार प्रदान किया है। पर्यटन को जन उद्योग बनाने के साथ ही व्यवहारिक स्तर पर पर्यटन को देश की प्रमुख आर्थिक गतिविधि बनाया जाए तो पर्यटन उद्योग यहां के जीवन स्तर में सकारात्मक रूप से खासा बदलाव ला सकता है। पर्यटन विकास के लिए यह जरूरी है कि सरकार अपनी भूमिका आधारभूत सुविधाएं जुटाने के रूप में निभाए, बाकी का कार्य निजी भागीदारी से तय किया जाना चाहिये। पर्यटन उद्योग से जुड़े उद्यमियों, सरकारी विभाग के कर्मचारियों व अधिकारियों की पर्यटन प्रबंध में भागीदारी सुनिश्चित की जाए। मरू त्रिकोण में स्थित मारवाड़ प्रदेश के पर्यटक स्थलों को परिवहन सुविधाओं से जोड़ा जाये। परिवहन के विकास के अन्तर्गत सड़कों का विकास, आधुनिक सुविधाओं युक्त बसों, विश्वस्तरीय प्लेटफार्मों, हवाई अड्डों, एयर बसें आदि को विकसित किया जाये।

क्षेत्र के विविध पर्यटन स्थलों की सूचना या फिर अन्य सम्बन्धित जानकारी के लिए ब्राउजर, कैटलोग से संस्कृति का प्रसार तथा प्रचार किया जाए। देश में सूचना प्रौद्योगिकी के विकास के साथ पर्यटन को प्रभावी प्रबंध के तहत जोड़कर भी पर्यटन उद्योग का विकास किया जा सकता है। इन्टरनेट को इसमें ट्यूरिजमनेट के रूप में परिवर्तित कर इस दिशा में प्रभावी पहल की जा सकती है।

पर्यावरण की सुरक्षा के लिए वर्तमान में ईका पर्यटन सम्बन्धी गतिविधियों का विश्व स्तर पर तीव्र गति से विकास हुआ है। ईको पर्यटन प्राकृतिक क्षेत्रों की वह उत्तरदायी यात्रा है। जिससे न केवल पर्यावरण संरक्षण को बल मिलता है। अपितु स्थानीय लोगों के कल्याण को सततता भी प्राप्त होती है। अतः राज्य सरकार से ये अपक्षा की जानी चाहिए कि प्राकृतिक व ऐतिहासिक धरोहर के संरक्षण के लिए ईको पर्यटन को बढ़ावा दें। विश्व स्तर पर संयुक्त राष्ट्र संघ ने वर्ष 2002 को "अन्तर्राष्ट्रीय ईको पर्यटन वर्ष" के रूप में संकलित किया।

संदर्भ सूची

1. शर्मा, जे.के. (2000) : ट्यूरिज्म एण्ड डवलपमेंट, कनिष्का पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, न्यू देहली।
2. सिंह, रवि शंकर कुमार (2003) : ईको ट्यूरिज्म एण्ड ससटेनेबल डवलवमेंट, अभिजीत पब्लिकेशन, दिल्ली।
3. प्रगति प्रतिवेदन – 2014–2015, पर्यटन विभाग, राजस्थान